

चलते-चलते

आदमी के पाँव दो हैं, पाँव-पाँव चलता है
पंछी भी कभी-कभी तो छाँव-छाँव चलता है
पैर है न पंख है फिर भी ये हवा चले
चलने वाले कैसे-कैसे, देखो किस तरह चले
अपने आप चलते-चलते मेज़ पर से गिर पड़ी
माधव ने कहा था, कल भी चल रही थी ये घड़ी!
माधव ने बताया, बाबू, फोन फिर से चल पड़ा
मैंने समझा नंगे पाँव धूप में निकल पड़ा
गुण्डों की लड़ाई में तो हॉकियाँ भी चलती हैं
कहते हैं, कभी-कभी चालाकियाँ भी चलती हैं
ठाएँ-ठाएँ करती सनसनाती गोलियाँ चलीं
बिन सड़क के, बस्तियों में कितनी बोलियाँ चलीं
हिलती-डुलती भी नहीं, मगर दुकान चलती है
मुँह में है बँधी हुई, मगर ज़बान चलती है
गर्मी, सर्दी, आँधी, पानी, एक जैसा चलता है
रात हो या दिन हो कहते हैं कि पैसा चलता है
दाएँ, बाएँ हर तरफ रिवाज़ चलते रहते हैं
बैठे-बैठे भी तो कामकाज चलते रहते हैं

- गुलज़ार